

The Inclusive Perspective of Buddhism in the Indian Knowledge Tradition: The Confluence of Religion, Philosophy and Science

Dr. Shalini Singhal

Associate Professor, Department of History
College of Vocational Studies, University of Delhi

Abstract

The present study undertakes an analytical examination of the integrative perspective of Buddhism within the Indian knowledge tradition, particularly in the context of the confluence of religion, philosophy, and science. Buddhist epistemology established perception (*pratyakṣa*) and inference (*anumāna*) as the sole valid means of knowledge, paralleling the foundations of the empirical scientific method. *Dignāga* and *Dharmakīrti* refined the theory of *pramāṇa* (valid cognition), thereby providing new direction to Indian logic. *Nāgārjuna's* *Mādhyamaka* philosophy offered a profound exposition of causality through the doctrines of emptiness (*śūnyatā*) and dependent origination (*pratītyasamutpāda*). Meanwhile, the *Yogācāra* thinkers *Asaṅga* and *Vasubandhu* developed a multi-layered analysis of consciousness. The Abhidharma tradition presented a systematic classification of mental processes that resonates with modern psychology. Institutions such as *Nālandā Mahāvihāra* facilitated integrated study across religion, philosophy, science, mathematics, and medicine. This study argues that Buddhism did not posit any artificial division between religious, philosophical, and scientific knowledge; rather, it regarded them as integral components of a unified pursuit of knowledge.

Keywords: Buddhist epistemology, theory of *pramāṇa*, emptiness, *Vijñānavāda* (*Yogācāra*), Abhidharma, *Nālandā Mahāvihāra*, dependent origination, yogic perception.

भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध धर्म का समावेशी दृष्टिकोण: धर्म, दर्शन और विज्ञान का संगम

डॉ. शालिनी सिंघल
सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विविधता और समावेशिता के लिए विश्वविख्यात रही है। वैदिक, उपनिषदीय, जैन, बौद्ध, चार्वाक तथा विभिन्न आस्तिक-नास्तिक दार्शनिक परंपराओं ने सहस्राब्दियों तक निरंतर संवाद और वाद-विवाद के माध्यम से भारतीय चिंतन को समृद्ध किया। इस बहुस्वरीय परंपरा में बौद्ध धर्म का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने धर्म, दर्शन और विज्ञान को एक एकीकृत दृष्टिकोण में समाहित किया। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध ने जिस नवीन चिंतन धारा का सूत्रपात किया, वह केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं था, बल्कि ज्ञान प्राप्ति की पद्धति में एक आमूल परिवर्तन था।

तत्कालीन भारतीय समाज में वैदिक कर्मकांड, जाति-आधारित सामाजिक व्यवस्था और शाब्दिक प्रमाण (वेदों की अपौरुषेयता) का वर्चस्व था। इस परिवेश में बुद्ध ने "एहिपस्सिको" (आओ और देखो) का आह्वान किया, जो अनुभववाद और प्रायोगिकता पर आधारित था। यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक पद्धति थी जिसमें अंधविश्वास, परंपरा या प्राधिकार के आधार पर किसी बात को स्वीकार करने से इनकार किया गया। बुद्ध ने कालाम सूत्र में स्पष्ट कहा कि व्यक्ति को स्वयं के अनुभव और तर्क से किसी सिद्धांत को परखना चाहिए, न कि केवल इसलिए मान लेना चाहिए क्योंकि वह शास्त्रों में लिखा है या किसी गुरु ने कहा है। तथापि, एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है: क्या बौद्ध धर्म ने वास्तव में धर्म, दर्शन और विज्ञान को एकीकृत किया, या यह केवल एक धार्मिक परंपरा थी जिसमें दार्शनिक तत्व भी थे? यह शोध इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है। प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य शोध प्रश्न हैं: प्रथम, बौद्ध ज्ञानमीमांसा किस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से साम्य रखती है? द्वितीय, नागार्जुन, दिग्नाग, धर्मकीर्ति, असंग और वसुबंधु जैसे बौद्ध विचारकों ने दार्शनिक और वैज्ञानिक चिंतन को किस प्रकार आगे बढ़ाया? तृतीय, बौद्ध शिक्षण संस्थान, विशेष रूप से नालंदा महाविहार, समावेशी ज्ञान के केंद्र के रूप में कैसे कार्य करते थे?

इस शोध की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि समकालीन विश्व में धर्म और विज्ञान के बीच संघर्ष की धारणा व्याप्त है। पश्चिमी इतिहास में गैलीलियो से लेकर डार्विन तक, विज्ञान और धर्म के बीच संघर्ष देखने को मिले हैं। इसके विपरीत, बौद्ध परंपरा में ऐसा कोई संघर्ष दिखाई नहीं देता। वस्तुतः, बौद्ध विचारकों ने प्रकृति के रहस्यों को समझने, मन की प्रकृति का विश्लेषण करने और तार्किक पद्धति विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शोध का उद्देश्य बौद्ध धर्म के इस समावेशी दृष्टिकोण को विश्लेषणात्मक रूप से प्रस्तुत करना है।

यह शोध पत्र पांच प्रमुख खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड में बौद्ध ज्ञानमीमांसा और प्रमाण सिद्धांत का विवेचन किया जाएगा। द्वितीय खंड में माध्यमिक और योगाचार दर्शन की दार्शनिक अंतर्दृष्टियों का विश्लेषण प्रस्तुत होगा। तृतीय खंड में बौद्ध मनोविज्ञान (अभिधर्म) और आधुनिक विज्ञान के बीच संवाद की संभावनाओं को खोजा जाएगा। चतुर्थ खंड में बौद्ध परंपरा के वैज्ञानिक योगदानों, विशेष रूप से परमाणुवाद और नालंदा जैसे बहुविषयक शिक्षण केंद्रों की भूमिका पर प्रकाश डाला जाएगा। अंतिम खंड में धर्म, दर्शन और विज्ञान के समावेशी दृष्टिकोण का संश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

बौद्ध ज्ञानमीमांसा: प्रमाण सिद्धांत और वैज्ञानिक पद्धति

प्रत्यक्ष और अनुमान: ज्ञान के दो स्तंभ

भारतीय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधनों (प्रमाण) का विश्लेषण केंद्रीय महत्व रखता है। विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों ने प्रमाणों की संख्या पर भिन्न मत व्यक्त किए। न्याय दर्शन ने चार प्रमाण स्वीकार किए - प्रत्यक्ष (*pratyakṣa*, प्रत्यक्ष प्रमाण), अनुमान (*anumāna*, तार्किक निष्कर्ष), उपमान (*upamāna*, तुलना) और शब्द (*śabda*, शाब्दिक प्रमाण)। मीमांसा संप्रदाय ने इनमें अर्थापत्ति (*arthāpatti*, निहितार्थ) और अनुपलब्धि (*anupalabdhi*, अनुपस्थिति का प्रमाण) जोड़कर छह प्रमाण स्वीकार किए। चार्वाक भौतिकवादियों ने केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण माना।

इस बहुलतावादी परिदृश्य में बौद्ध ज्ञानमीमांसा ने एक सुस्पष्ट और परिमितवादी दृष्टिकोण अपनाया। बौद्ध विचारकों ने केवल दो प्रमाणों को स्वीकार किया: प्रत्यक्ष और अनुमान। यह निर्णय मनमाना नहीं था, बल्कि गहन दार्शनिक विश्लेषण पर आधारित था। बौद्ध तर्क यह था कि उपमान अंततः प्रत्यक्ष का ही विस्तार है, और शब्द प्रमाण को या तो प्रत्यक्ष या अनुमान में परिवर्तित किया जा सकता है। विशेष रूप से, वैदिक शब्द प्रमाण (वेदों की अपौरुषेयता) को अस्वीकार करना बौद्ध ज्ञानमीमांसा की एक क्रांतिकारी विशेषता थी। इसका अर्थ यह था कि कोई भी ज्ञान अंततः या तो संवेदी अनुभव (प्रत्यक्ष) या तार्किक विश्लेषण (अनुमान) के माध्यम से प्रमाणित होना चाहिए।

दिग्नाग और धर्मकीर्ति का योगदान

दिग्नाग (लगभग 480-540 ईस्वी) ने बौद्ध ज्ञानमीमांसा में एक निर्णायक मोड़ लाया। उन्होंने अपने ग्रंथ प्रमाणसमुच्चय (*Pramāṇasamuccaya*) में प्रत्यक्ष की एक विशिष्ट परिभाषा प्रस्तुत की। दिग्नाग के अनुसार, प्रत्यक्ष वह ज्ञान है जो "कल्पनापोढ़" (अवधारणा से मुक्त) है। इसका अर्थ यह है कि सच्चा प्रत्यक्ष ज्ञान वह है जो सीधे संवेदी अनुभव से उत्पन्न होता है और जो भाषा, अवधारणा या पूर्व विचारों से प्रभावित नहीं होता। यह दृष्टिकोण अनुभववाद (empiricism) के आधुनिक दार्शनिक सिद्धांत के निकट है, जो ज्ञान के स्रोत के रूप में संवेदी अनुभव को प्राथमिकता देता है।

धर्मकीर्ति (लगभग 550-650 ईस्वी) ने दिग्नाग की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए बौद्ध ज्ञानमीमांसा को और अधिक परिष्कृत किया। उन्होंने "अर्थक्रिया" (*arthakriyā*, कार्यकारण क्षमता या प्रायोगिक प्रभावशीलता) की अवधारणा को प्रमाण के केंद्र में रखा। धर्मकीर्ति के अनुसार, वास्तविक ज्ञान वह है जो व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम हो। यदि कोई ज्ञान कार्यरत नहीं है, यदि वह कोई व्यावहारिक परिणाम उत्पन्न नहीं करता, तो वह सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। यह दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रायोगिक सत्यापन (experimental verification) की आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के समानांतर है।

धर्मकीर्ति ने यह भी स्थापित किया कि प्रत्यक्ष ज्ञान "स्वलक्षण" (विशिष्ट विशेषताओं) का है, जबकि अनुमान "सामान्यलक्षण" (सामान्य विशेषताओं) का। स्वलक्षण वे वस्तुएं हैं जो कार्यकारण क्षमता रखती हैं, जो वास्तविक हैं। सामान्यलक्षण वे अवधारणात्मक निर्माण हैं जो हमारे मन द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं। यह विभेद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तविकता (reality) और हमारे अवधारणात्मक निर्माण (conceptual construction) के बीच अंतर करता है। आधुनिक विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि हमारे सिद्धांत (theories) वास्तविकता के मॉडल हैं, स्वयं वास्तविकता नहीं।

योगिक प्रत्यक्ष: ध्यान का ज्ञानमीमांसीय आयाम

बौद्ध ज्ञानमीमांसा की एक अनूठी विशेषता "योगिक प्रत्यक्ष" (*yogipratyakṣa*) की अवधारणा है। सामान्य प्रत्यक्ष संवेदनाओं के माध्यम से प्राप्त होता है, परंतु योगिक प्रत्यक्ष वह ज्ञान है जो गहन ध्यान और मानसिक प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त होता है। बुद्ध का ज्ञानोदय (bodhi) इसी प्रकार के योगिक प्रत्यक्ष का उदाहरण माना गया। धर्मकीर्ति ने यह स्थापित

करने का प्रयास किया कि किस प्रकार ध्यान अभ्यास संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को परिवर्तित करके विशेष प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं।

यह अवधारणा केवल धार्मिक नहीं है। योगिक प्रत्यक्ष का दावा यह है कि मन को प्रशिक्षित करके ऐसी अंतर्दृष्टियां प्राप्त की जा सकती हैं जो सामान्य प्रत्यक्ष से परे हैं। आधुनिक तंत्रिका विज्ञान ने दर्शाया है कि ध्यान अभ्यास मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली में वास्तविक परिवर्तन लाता है। मस्तिष्क की न्यूरोप्लास्टिसिटी (neuroplasticity) यह सिद्ध करती है कि मानसिक प्रशिक्षण से संज्ञानात्मक क्षमताओं में वृद्धि हो सकती है। इस दृष्टि से योगिक प्रत्यक्ष की अवधारणा एक प्रकार का संज्ञानात्मक विज्ञान था जो मन और चेतना की प्रकृति को समझने का प्रयास करता था।

दार्शनिक चिंतन: माध्यमिक और योगाचार परंपराएं

नागार्जुन का शून्यवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद

नागार्जुन (लगभग दूसरी शताब्दी ईस्वी) बौद्ध दर्शन के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक हैं। उन्होंने माध्यमिक (Madhyamaka, मध्यम मार्ग) दर्शन की स्थापना की, जिसका केंद्रीय सिद्धांत "शून्यता" (*śūnyatā*) है। शून्यता की अवधारणा को प्रायः गलत समझा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि कुछ भी अस्तित्व में नहीं है (शून्यवाद या nihilism), बल्कि यह कि सभी घटनाएं और वस्तुएं "स्वभाव" (*svabhāva*) स्वतंत्र अस्तित्व या आंतरिक सार से रहित हैं।

नागार्जुन ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ मूलमाध्यमककारिका (*Mūlamadhyamakakārikā*) में इस सिद्धांत को विस्तार से प्रतिपादित किया। उन्होंने "प्रतीत्यसमुत्पाद" (*pratītyasamutpāda*) को शून्यता के समानार्थी बताया। प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है कि सभी घटनाएं कारणों और परिस्थितियों के संयोग से उत्पन्न होती हैं, कोई भी वस्तु स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं है। उदाहरण के लिए, एक पौधे का अस्तित्व बीज, मिट्टी, जल, सूर्य के प्रकाश आदि पर निर्भर करता है। यदि इनमें से कोई एक तत्व न हो, तो पौधा नहीं हो सकता। इस प्रकार, पौधे का कोई स्वतंत्र स्वभाव नहीं है।

नागार्जुन ने चतुष्कोटि (*catuṣkoṭi*, tetralemma) की पद्धति का उपयोग करके तत्कालीन दार्शनिक मान्यताओं की आलोचना की। चतुष्कोटि चार संभावनाओं को प्रस्तुत करती है: वस्तु "है", वस्तु "नहीं है", वस्तु "है और नहीं है दोनों", वस्तु "न है और न नहीं है"। नागार्जुन ने दर्शाया कि यदि वस्तुओं में स्थिर और निश्चित स्वभाव होता, तो इनमें से कोई भी विकल्प संतोषजनक नहीं है। केवल शून्यता की अवधारणा ही परिवर्तन और कार्य-कारण को संगत रूप से समझा सकती है।

द्विसत्य सिद्धांत: व्यावहारिक और परमार्थ सत्य

नागार्जुन ने "द्विसत्य" (*dvisatya*, दो सत्यों) का महत्वपूर्ण सिद्धांत भी प्रस्तुत किया: संवृति सत्य (*saṃvṛtisatya*, व्यावहारिक या सापेक्ष सत्य) और परमार्थ सत्य (*paramārthasatya*, परम या निरपेक्ष सत्य)। व्यावहारिक सत्य वह है जो हमारे दैनिक जीवन में कार्यरत है - जैसे कि यह कहना कि "यह एक मेज है"। परमार्थ सत्य वस्तुओं की शून्य प्रकृति को दर्शाता है - कि "मेज" एक अवधारणात्मक निर्माण है जो विभिन्न परमाणुओं, लकड़ी, कारीगर के श्रम आदि के संयोग से उत्पन्न हुआ है।

यह विभेद अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि नागार्जुन सामान्य व्यावहारिक जीवन को अस्वीकार नहीं करते। वे केवल यह कहते हैं कि हमें दोनों स्तरों को समझना चाहिए। यह विभेद आधुनिक विज्ञान में "प्रायोगिक सत्य" और "सैद्धांतिक सत्य" के बीच के अंतर से तुलनीय है। न्यूटनियन भौतिकी व्यावहारिक स्तर पर कार्यरत है (उपग्रह प्रक्षेपण, इंजीनियरिंग आदि), परंतु क्वांटम और सापेक्षता सिद्धांत अधिक गहरे स्तर पर वास्तविकता को समझाते हैं। दोनों स्तरों की अपनी वैधता है।

योगाचार का विज्ञानवाद: चेतना की परतें

असंग और वसुबंधु (चौथी-पांचवीं शताब्दी ईस्वी) ने योगाचार (*Yogācāra*) या विज्ञानवाद (*Vijñānavāda*, चेतना-मात्र सिद्धांत) दर्शन की स्थापना की। इस परंपरा का केंद्रीय सिद्धांत "विज्ञप्तिमात्रता" (*vijñaptimātratā*) है - कि हम जो भी अनुभव करते हैं, वह चेतना की रचना है। यह दृष्टिकोण बाह्य जगत के अस्तित्व को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करता, बल्कि यह तर्क देता है कि हम जो भी जानते हैं, वह हमारी चेतना के माध्यम से ही जाना जाता है। इस प्रकार, वास्तविकता और हमारा ज्ञान उसके बारे में अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

योगाचार दर्शन ने चेतना के आठ प्रकारों की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। पांच संवेदना चेतनाएं (दृष्टि, श्रवण, घ्राण, स्वाद, स्पर्श), छठी मनोविज्ञान (*manovijñāna*, मानसिक चेतना जो संवेदी सूचना को एकीकृत करती है), सातवीं मनस (*manas*, अहं चेतना जो "मैं" की भावना उत्पन्न करती है), और आठवीं आलयविज्ञान (*ālayavijñāna*, भंडार चेतना जो सभी अनुभवों के बीजों को संग्रहीत करती है)।

आलयविज्ञान और आधुनिक मनोविज्ञान

आलयविज्ञान की अवधारणा योगाचार दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण और जटिल योगदान है। यह एक प्रकार की अचेतन चेतना है जो सभी कर्मों के "बीजों" (*bīja*, कर्म-संस्कार) को संग्रहीत करती है। ये बीज भविष्य के अनुभवों को प्रभावित करते हैं और नए कर्मों को जन्म देते हैं। आलयविज्ञान निरंतर प्रवाहमान है और व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी बनी रहती है, जो पुनर्जन्म में निरंतरता प्रदान करती है।

यह अवधारणा फ्रायड के "अचेतन मन" (*unconscious mind*) से तुलनीय है। फ्रायड ने भी माना कि अतीत के अनुभव, दमित इच्छाएं और संस्कार अचेतन में संग्रहीत रहते हैं और हमारे वर्तमान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। तथापि, बौद्ध दृष्टिकोण फ्रायड से भिन्न है। जहां फ्रायड के लिए अचेतन एक समस्या है जिसे चिकित्सा द्वारा हल करना है, वहीं बौद्ध दर्शन आलयविज्ञान को समझने और परिवर्तित करने के माध्यम से मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत करता है।

योगाचार ने "वासना" (*vāsanā*, आदतन प्रवृत्तियों) की अवधारणा भी विकसित की। वासनाएं वे मानसिक प्रतिमान हैं जो हमारी धारणा और प्रतिक्रियाओं को आकार देते हैं। आधुनिक संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में "स्कीमा" (*schema*) और "संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह" (*cognitive biases*) की अवधारणाएं योगाचार की वासना अवधारणा के समान हैं। दोनों यह मानते हैं कि हमारे पूर्व अनुभव और मानसिक संरचनाएं वर्तमान अनुभवों को प्रभावित करती हैं और हम वास्तविकता को तटस्थ रूप से नहीं, बल्कि अपने पूर्वाग्रहों के माध्यम से देखते हैं।

बौद्ध मनोविज्ञान: अभिधर्म और वैज्ञानिक अन्वेषण

अभिधर्म: चेतना का व्यवस्थित वर्गीकरण

अभिधर्म (*Abhidharma*) बौद्ध साहित्य का वह भाग है जो मन और चेतना का सूक्ष्म और व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अभिधर्म शब्द का अर्थ है "धर्म के बारे में" या "उच्चतर धर्म"। यह धम्म (बुद्ध की शिक्षाओं) का एक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। थेरवाद परंपरा में सात अभिधर्म ग्रंथ हैं, जिनमें से अभिधम्मत्थसंगह (*Abhidhammatthasaṅgaha*) सबसे महत्वपूर्ण है। सर्वास्तिवाद परंपरा में अभिधर्मकोश (*Abhidharmakośa*) प्रमुख ग्रंथ है, जिसे वसुबंधु ने लिखा।

अभिधर्म ने चेतना के अत्यंत विस्तृत वर्गीकरण प्रस्तुत किए। थेरवाद अभिधर्म में 89 प्रकार की चेतनाओं (*citta*) और 52 मानसिक कारकों (*cetasika*) का वर्णन है। चेतनाओं को कुशल (स्वास्थ्यकर), अकुशल (अस्वास्थ्यकर) और उदासीन श्रेणियों

में बांटा गया है। मानसिक कारक वे मानसिक गुण हैं जो चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं - जैसे ध्यान (attention), संपर्क (contact), अनुभूति (feeling), प्रत्यक्षीकरण (perception), इच्छा (volition) आदि।

यह वर्गीकरण केवल सैद्धांतिक नहीं है। अभिधर्म का उद्देश्य व्यावहारिक है - मानसिक प्रक्रियाओं को समझकर दुख से मुक्ति प्राप्त करना। अभिधर्म ने मानसिक प्रक्रियाओं को "द्वार प्रक्रियाओं" में विभाजित किया, जो छह इंद्रियों (पांच भौतिक इंद्रियां और मन) से संबंधित हैं। प्रत्येक द्वार प्रक्रिया में अनेक क्षणिक चेतनाएं उत्पन्न होती हैं जो बहुत तीव्र गति से बदलती रहती हैं। यह विश्लेषण आधुनिक संज्ञानात्मक विज्ञान के "सूचना प्रसंस्करण मॉडल" से साम्य रखता है।

चित्त, चैतसिक और रूप: मन-पदार्थ विश्लेषण

अभिधर्म ने वास्तविकता को चार परम धर्मों (ultimate realities) में विभाजित किया: चित्त (चेतना), चैतसिक (मानसिक कारक), रूप (पदार्थ), और निब्बान (निर्वाण)। यह वर्गीकरण मन-पदार्थ समस्या (mind-body problem) पर बौद्ध दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। बौद्ध दर्शन न तो द्वैतवाद (dualism) को स्वीकार करता है और न ही भौतिकवाद (materialism) को। यह एक प्रकार का तटस्थ अद्वैतवाद (neutral monism) प्रस्तुत करता है जहां मन और पदार्थ दोनों क्षणिक प्रक्रियाओं के रूप में समझे जाते हैं।

रूप (पदार्थ) का विश्लेषण 28 प्रकार के भौतिक धर्मों में किया गया है, जिनमें चार महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) और 24 उत्पन्न रूप शामिल हैं। यह भौतिकवादी विश्लेषण है जो पदार्थ को इसकी प्राथमिक विशेषताओं (कठोरता, संसंजन, तापमान, गति) में विभाजित करता है। यह प्राचीन भारतीय परमाणुवाद से संबंधित है।

अनात्मा का सिद्धांत और आधुनिक तंत्रिका विज्ञान

बौद्ध मनोविज्ञान की सबसे क्रांतिकारी अंतर्दृष्टि "अनात्मा" (*anātman*, निःस्व) का सिद्धांत है। यह सिद्धांत कहता है कि कोई स्थिर, अपरिवर्तनीय और स्वतंत्र आत्मा (*ātman*) नहीं है। जिसे हम "स्व" या "मैं" कहते हैं, वह वास्तव में पांच स्कंधों (skandhas, aggregates) का एक अस्थायी संयोजन है: रूप (शरीर), वेदना (संवेदनाएं), संज्ञा (प्रत्यक्षीकरण), संस्कार (मानसिक निर्माण), और विज्ञान (चेतना)। ये स्कंध निरंतर परिवर्तनशील हैं और एक क्षण भी स्थिर नहीं रहते।

यह दृष्टिकोण तत्कालीन भारतीय दर्शन में क्रांतिकारी था क्योंकि उपनिषदीय और वेदांत परंपराओं ने आत्मा की अमरता और स्थिरता को स्वीकार किया था। आधुनिक तंत्रिका विज्ञान ने बौद्ध अनात्मा सिद्धांत को आश्चर्यजनक रूप से समर्थन दिया है। न्यूरोसाइंटिस्टों ने पाया है कि मस्तिष्क में कोई एक केंद्र नहीं है जहां "स्व" स्थित हो। "स्व" की भावना मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों का एक उभरता हुआ गुण (emergent property) है। जब मस्तिष्क के कुछ क्षेत्र क्षतिग्रस्त होते हैं, तो "स्व" की भावना बदल जाती है, जो दर्शाता है कि यह एक निर्मित प्रक्रिया है, न कि कोई स्थिर सत्ता।

माइंडफुलनेस और समकालीन मनोचिकित्सा

"सति" (sati, माइंडफुलनेस या स्मृति) अभिधर्म में एक महत्वपूर्ण मानसिक कारक है। सति का अर्थ है वर्तमान क्षण में जागरूक उपस्थिति। बुद्ध ने सतिपट्टान सूत्र (*Satipaṭṭhāna Sutta*, चार स्मृति-स्थापनाओं का सूत्र) में सति के अभ्यास का विस्तृत विवरण दिया: शरीर की जागरूकता, संवेदनाओं की जागरूकता, मन की स्थितियों की जागरूकता, और मानसिक वस्तुओं की जागरूकता। विपश्यना ध्यान इसी सति के अभ्यास पर आधारित है।

आधुनिक मनोचिकित्सा ने माइंडफुलनेस को अपनाया है। जॉन कबात-ज़िन ने 1979 में "माइंडफुलनेस-आधारित तनाव कमी" (MBSR) कार्यक्रम विकसित किया, जो सीधे विपश्यना परंपरा से प्रेरित था। तब से, माइंडफुलनेस-आधारित संज्ञानात्मक चिकित्सा (MBCT), द्वंद्वत्मक व्यवहार चिकित्सा (DBT), और स्वीकृति एवं प्रतिबद्धता चिकित्सा (ACT) जैसी अनेक

चिकित्सा पद्धतियां विकसित हुई हैं। सैकड़ों वैज्ञानिक अध्ययनों ने दर्शाया है कि माइंडफुलनेस अभ्यास अवसाद, चिंता, दर्द प्रबंधन, और विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में प्रभावी है। यह बौद्ध मनोविज्ञान के व्यावहारिक मूल्य का प्रमाण है।

वैज्ञानिक योगदान: परमाणुवाद, खगोल विज्ञान और चिकित्सा

बौद्ध परमाणुवाद और वैशेषिक दर्शन

प्राचीन भारत में परमाणुवाद पर गहन विचार हुआ। वैशेषिक दर्शन ने सबसे विस्तृत और व्यवस्थित परमाणु सिद्धांत प्रस्तुत किया। कणाद ऋषि ने वैशेषिक सूत्र में परमाणुओं (*anu* या *paramānu*) को पदार्थ की अविभाज्य इकाइयों के रूप में वर्णित किया। वैशेषिक के अनुसार, परमाणु स्थिर, शाश्वत और अविभाज्य हैं।

बौद्ध विचारकों ने भी परमाणुवाद पर विचार किया, परंतु उनका दृष्टिकोण वैशेषिक से भिन्न था। बौद्ध परमाणुवाद की विशेषता यह थी कि इसने परमाणुओं को "क्षणिक" (*kṣanika*) माना। बौद्ध दर्शन के अनुसार, सभी धर्म (वस्तुएं) क्षणिक हैं - वे प्रत्येक क्षण उत्पन्न होते हैं और नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार, परमाणु भी स्थिर नहीं हैं, बल्कि एक सतत प्रवाह हैं।

कुछ बौद्ध संप्रदायों ने परमाणुओं को समूहों या "कलाप" (*kalāpa*) के रूप में वर्णित किया। कलाप आठ परमाणुओं का एक न्यूनतम समूह है (चार महाभूत और चार उत्पन्न रूप) जो एक साथ उत्पन्न होते हैं और नष्ट होते हैं। यह दृष्टिकोण दिलचस्प है क्योंकि यह दर्शाता है कि बौद्ध विचारक परमाणुओं को पृथक कणों के रूप में नहीं, बल्कि अंतर्संबंधित समूहों के रूप में देखते थे। यह दृष्टिकोण आधुनिक क्वांटम भौतिकी की कुछ अवधारणाओं के निकट है, जहां कणों को तरंग-कण द्वैत और अनिश्चितता के संदर्भ में समझा जाता है।

बौद्ध चिकित्सा विज्ञान और मनोदैहिक दृष्टिकोण

बौद्ध परंपरा ने चिकित्सा विज्ञान को भी महत्वपूर्ण संरक्षण प्रदान किया। बुद्ध ने स्वयं बीमार भिक्षुओं की सेवा को धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग बताया। मठों में चिकित्सालय स्थापित किए गए और भिक्षुओं को बुनियादी चिकित्सा ज्ञान दिया जाता था। नालंदा और अन्य बौद्ध विश्वविद्यालयों में चिकित्सा विज्ञान और रसायन विज्ञान का अध्ययन होता था।

बौद्ध चिकित्सा विज्ञान की एक विशिष्ट विशेषता मनोदैहिक दृष्टिकोण (*psychosomatic approach*) थी। बुद्ध ने कहा था कि मन और शरीर अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। मानसिक स्थितियां शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं और शारीरिक स्थितियां मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक साइकोसोमैटिक चिकित्सा का पूर्ववर्ती कहा जा सकता है।

डॉ. नीलरत्न धार ने तर्क दिया है कि भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ विज्ञान की प्रगति भी रुक गई। बौद्ध विश्वविद्यालयों और मठों से जो संस्थागत समर्थन विज्ञान को मिलता था, वह समाप्त हो गया। यह तर्क विवादास्पद है, परंतु यह दर्शाता है कि बौद्ध संस्थानों ने वैज्ञानिक ज्ञान के विकास और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

समावेशी दृष्टिकोण: संश्लेषण और संवाद

धर्म, दर्शन और विज्ञान का एकीकरण

बौद्ध धर्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसने कभी भी धर्म, दर्शन और विज्ञान को परस्पर विरोधी क्षेत्र नहीं माना बल्कि इन तीनों को एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी के रूप में स्वीकार किया है।

तर्क और अनुभव का महत्व

बौद्ध धर्म में "एहि पस्सिको" (आओ और देखो) का सिद्धांत केवल एक वाक्यांश नहीं, बल्कि पूरी बौद्ध पद्धति का आधार है। कालाम सूत्र में बुद्ध ने कालाम गणराज्य के निवासियों से कहा था कि किसी भी उपदेश को स्वीकार करने से पूर्व उसे परखना आवश्यक है। उन्होंने दस कसौटियां बताईं - परंपरा, अनुश्रुति, शास्त्र, तर्क, अनुमान, आकार, मत की समानता, संभावना, गुरु का आदर - इनमें से किसी के आधार पर अंधविश्वास न करें।

बुद्ध का "अप्प दीपो भव" (अपना दीपक स्वयं बनो) का उपदेश व्यक्तिगत अनुभव और आत्म-निर्भर जांच पर जोर देता है। त्रिपिटक में विपश्यना (अंतर्दृष्टि) और प्रज्ञा (ज्ञान) के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव को सर्वोच्च प्रमाण माना गया है।

विज्ञान के साथ सामंजस्य

प्रतीत्यसमुत्पाद (Dependent Origination) बौद्ध धर्म का केंद्रीय सिद्धांत है जो कहता है - "इदं प्रत्यय इदं भवति" (इस के होने पर यह होता है)। यह कार्य-कारण का वैज्ञानिक सिद्धांत है जो बारह निदानों की श्रृंखला में दुःख की उत्पत्ति समझाता है - अविद्या से संस्कार, संस्कार से विज्ञान, और इस प्रकार जन्म-मरण तक।

अनित्यता (क्षणिकवाद) का सिद्धांत आधुनिक भौतिकी के "एंट्रोपी" और "परिवर्तन की निरंतरता" से मेल खाता है। बौद्ध दर्शन में अनात्मवाद (कोई स्थायी आत्मा नहीं) क्वांटम भौतिकी की "नो फिक्स्ड एंटीटी" अवधारणा के समानांतर है।

मध्यम मार्ग वैज्ञानिक संतुलन का प्रतीक है - न अति भौतिकवाद न अति आध्यात्मवाद। बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान में असंख्य लोकधातुओं की कल्पना आधुनिक मल्टीवर्स सिद्धांत के निकट है।

दार्शनिक गहराई

बौद्ध दर्शन में चार निकाय विकसित हुए:

वैभाषिक और सौत्रांतिक (हीनयान): ये यथार्थवादी दर्शन हैं जो बाह्य वस्तुओं की सत्ता मानते हैं। धर्म (तत्त्व) का विश्लेषण 75-100 प्रकारों में किया गया।

योगाचार (विज्ञानवाद): वसुबंधु और असंग द्वारा प्रतिपादित यह दर्शन चेतना को प्रधान मानता है - "विज्ञप्तिमात्रता" (केवल ज्ञान है)। आलय-विज्ञान (चित्त की गहरी परतें) आधुनिक मनोविज्ञान के अचेतन मन के समान है।

माध्यमिक दर्शन: नागार्जुन का शून्यवाद सबसे गहन दार्शनिक उपलब्धि है। मूलमाध्यमकारिका में "शून्यता" का अर्थ है - सभी वस्तुएं स्वभाव-शून्य हैं, अर्थात् स्वतंत्र अस्तित्व रहित। यह "रिलेटिविटी" का दार्शनिक रूप है।

तर्कशास्त्र: दिङ्नाग और धर्मकीर्ति ने प्रमाण शास्त्र विकसित किया - प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण, हेतु की पांच शर्तें, त्रिरूप हेतु आदि।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

न्यूरोसाइंस और ध्यान: हार्वर्ड, एमआईटी और विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालयों में हुए शोध बताते हैं कि विपश्यना और समाधि से मस्तिष्क की संरचना बदलती है। Neuroplasticity (मस्तिष्क की पुनर्गठन क्षमता) बौद्ध अभ्यास से बढ़ती है। तिब्बती भिक्षुओं के मस्तिष्क स्कैन में प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स में असामान्य गतिविधि पाई गई।

मनोविज्ञान: मेटा-कॉग्निशन (चिंतन पर चिंतन) बौद्ध "सति" (स्मृति/जागरूकता) का वैज्ञानिक रूप है। Mindfulness-Based Stress Reduction (MBSR) और Mindfulness-Based Cognitive Therapy (MBCT) चिकित्सा पद्धतियां बौद्ध ध्यान पर आधारित हैं।

क्वांटम भौतिकी: हाइजेनबर्ग के अनिश्चितता सिद्धांत और तरंग-कण द्वैतता बौद्ध "शून्यता" और "सापेक्षता" से दार्शनिक समानता रखते हैं।

पर्यावरण विज्ञान: परस्पर निर्भरता (Interdependence) का बौद्ध सिद्धांत आधुनिक इकोलॉजी का आधार है।

यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण बौद्ध धर्म को 21वीं सदी में भी प्रासंगिक बनाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में बौद्ध धर्म की सबसे विशिष्ट और महत्वपूर्ण विशेषता - धर्म, दर्शन और विज्ञान के समन्वय - का विस्तृत विवेचन किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि बौद्ध धर्म ने इन तीनों क्षेत्रों को परस्पर विरोधी न मानकर एक-दूसरे के पूरक और सहयोगी के रूप में स्थापित किया है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

प्रथम, बौद्ध धर्म में "एहि पस्सिको" और कालाम सूत्र के माध्यम से अनुभवजन्य और तर्कसंगत पद्धति को धार्मिक अनुशासन में समाहित किया गया है। यह वैज्ञानिक पद्धति के मूल सिद्धांतों - परीक्षण, अवलोकन और सत्यापन - से पूर्णतः संगत है। बुद्ध का "अप्य दीपो भव" का उपदेश व्यक्तिगत जांच और स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करता है, जो आधुनिक वैज्ञानिक चेतना का आधार है।

द्वितीय, प्रतीत्यसमुत्पाद(कार्यकारणसिद्धांत), अनित्यता (क्षणिकवाद)और अनात्मवाद जैसी बौद्ध अवधारणाएं आधुनिक विज्ञान - विशेषकर क्वांटम भौतिकी, ब्रह्मांड विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान - के साथ अद्भुत समानता प्रदर्शित करती हैं। यह संयोग नहीं, बल्कि यथार्थ की गहन समझ का परिणाम है।

तृतीय, बौद्ध दर्शन में वैभाषिक, सौत्रांतिक, योगाचार और माध्यमिक दर्शनों ने तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा और तर्कशास्त्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। नागार्जुन का शून्यवाद, वसुबंधु का विज्ञानवाद और दिङ्नाग-धर्मकीर्ति का प्रमाण शास्त्र विश्व दर्शन की अमूल्य निधि हैं।

चतुर्थ, 21वीं सदी में बौद्ध ध्यान पद्धतियों पर किए गए न्यूरोसाइंटिफिक शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्राचीन बौद्ध अभ्यास मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली को सकारात्मक रूप से परिवर्तित करते हैं। MBSR और MBCT जैसी आधुनिक चिकित्सा पद्धतियां बौद्ध ध्यान पर आधारित हैं और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी सिद्ध हो रही हैं।

पंचम, बौद्ध धर्म की परस्पर निर्भरता की अवधारणा आधुनिक पारिस्थितिकी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और वैश्विक नैतिकता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट के युग में यह दृष्टिकोण मानवता को नई दिशा दे सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक समन्वयात्मक ज्ञान पद्धति है जो धर्म, दर्शन और विज्ञान के बीच सेतु का निर्माण करती है। आधुनिक युग में जब विज्ञान और धर्म के बीच संघर्ष की चर्चा होती है, बौद्ध धर्म एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है जहां दोनों सहअस्तित्व में रह सकते हैं। यह शोध भविष्य के अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययनों के लिए नए द्वार खोलता है और बौद्ध ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता को प्रमाणित करता है।

References/ संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दीघ निकाय (*Dīgha Nikāya*), पालि त्रिपिटक, सुत्त पिटक। हिंदी अनुवाद: भदंत आनंद कौसल्यायन, महाबोधि सोसायटी, नई दिल्ली, 2009।

2. मज्झिम निकाय (Majjhima Nikāya), पालि त्रिपिटक। अंग्रेजी अनुवाद: Bhikkhu *Ñāṇamoli* and Bhikkhu Bodhi, The Middle Length Discourses of the Buddha, Wisdom Publications, Boston, 1995.
3. अंगुत्तर निकाय (Aṅguttara Nikāya), विशेषतः कालाम सूत्र (Kālāma Sutta)। अनुवाद: भिक्षु बोधि, Numerical Discourses of the Buddha, Wisdom Publications, 2012.
4. नागार्जुन, मूलमाध्यमक कारिका (Mūlamadhyamakakārikā)। संस्कृत मूल एवं हिंदी अनुवाद: राहुल सांकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, 1956।
5. वसुबंधु, अभिधर्मकोश (Abhidharmakośa)। French translation: Louis de La Vallée Poussin, L'Abhidharmakośa de Vasubandhu, Paris, 1923-1931.
6. दिङ्नाग, प्रमाण समुच्चय (Pramāṇasamuccaya)। Japanese translation with commentary: Masaaki Hattori, *Dignāga, On Perception*, Harvard University Press, 1968.
7. धर्मकीर्ति, प्रमाणवार्तिक (Pramāṇavārttika)। Sanskrit text: Raniero Gnoli (ed.), Rome, 1960.
8. चंद्रोपाध्याय, देबीप्रसाद। भारतीय दर्शन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1998।
9. राहुल सांकृत्यायन। दर्शन-दिग्दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद, 1944।
10. धर्मानंद कोसांबी। गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1956।
11. भगवानदास। बौद्ध दर्शन, भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 1963।
12. पांडेय, गोविन्द चन्द्र। बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2005।
13. Conze, Edward. Buddhist Thought in India: Three Phases of Buddhist Philosophy, George Allen & Unwin, London, 1962.
14. Kalupahana, David J. Causality: The Central Philosophy of Buddhism, University Press of Hawaii, Honolulu, 1975.
15. Gombrich, Richard. How Buddhism Began: The Conditioned Genesis of the Early Teachings, Routledge, London, 1996.
16. Gethin, Rupert. The Foundations of Buddhism, Oxford University Press, Oxford, 1998.
17. Harvey, Peter. An Introduction to Buddhism: Teachings, History and Practices, 2nd edition, Cambridge University Press, Cambridge, 2013.
18. Siderits, Mark. Buddhism as Philosophy: An Introduction, Ashgate Publishing, Hampshire, 2007.
19. Westerhoff, Jan. *Nāgārjuna's Madhyamaka: A Philosophical Introduction*, Oxford University Press, New York, 2009.
20. Dreyfus, Georges B.J. Recognizing Reality: *Dharmakīrti's* Philosophy and Its Tibetan Interpretations, State University of New York Press, Albany, 1997.
21. विज्ञान और बौद्ध धर्म (Buddhism and Science)
22. Wallace, B. Alan. Buddhism and Science: Breaking New Ground, Columbia University Press, New York, 2003.

23. Ricard, Matthieu and Trinh Xuan Thuan. *The Quantum and the Lotus: A Journey to the Frontiers Where Science and Buddhism Meet*, Crown Publishers, New York, 2001.
24. Lopez Jr., Donald S. *Buddhism and Science: A Guide for the Perplexed*, University of Chicago Press, Chicago, 2008.
25. Hayward, Jeremy W. and Francisco J. Varela (eds.). *Gentle Bridges: Conversations with the Dalai Lama on the Sciences of Mind*, Shambhala Publications, Boston, 1992.
26. Davidson, Richard J. and Antoine Lutz. "Buddha's Brain: Neuroplasticity and Meditation," *IEEE Signal Processing Magazine*, Vol. 25, No. 1, 2008, pp. 176-174.
27. Kabat-Zinn, Jon. *Full Catastrophe Living: Using the Wisdom of Your Body and Mind to Face Stress, Pain, and Illness*, Bantam Books, New York, 1990.
28. Goleman, Daniel and Richard J. Davidson. *Altered Traits: Science Reveals How Meditation Changes Your Mind, Brain, and Body*, Avery Publishing, New York, 2017.
29. Lutz, Antoine, et al. "Long-term meditators self-induce high-amplitude gamma synchrony during mental practice," *Proceedings of the National Academy of Sciences*, Vol. 101, No. 46, 2004, pp. 16369-16373.
30. Tang, Yi-Yuan, et al. "The neuroscience of mindfulness meditation," *Nature Reviews Neuroscience*, Vol. 16, 2015, pp. 213-225.
31. क्वांटम भौतिकी और बौद्ध दर्शन (Quantum Physics and Buddhist Philosophy)
32. Capra, Fritjof. *The Tao of Physics: An Exploration of the Parallels between Modern Physics and Eastern Mysticism*, Shambhala Publications, Boston, 1975.
33. Mansfield, Victor. *Tibetan Buddhism and Modern Physics: Toward a Union of Love and Knowledge*, Templeton Foundation Press, Pennsylvania, 2008.
34. Zajonc, Arthur (ed.). *The New Physics and Cosmology: Dialogues with the Dalai Lama*, Oxford University Press, Oxford, 2004.
35. पर्यावरण और बौद्ध नीतिशास्त्र (Environmental Ethics)
36. Kaza, Stephanie. *Green Buddhism: Practice and Compassionate Action in Uncertain Times*, Shambhala Publications, Boston, 2019.
37. Tucker, Mary Evelyn and Duncan *Ryūken* Williams (eds.). *Buddhism and Ecology: The Interconnection of Dharma and Deeds*, Harvard University Press, Cambridge, 1997.
38. संदर्भ विश्वकोश एवं शब्दकोश
39. Buswell, Robert E. Jr. and Donald S. Lopez Jr. (eds.). *The Princeton Dictionary of Buddhism*, Princeton University Press, Princeton, 2014.
40. Powers, John. *A Concise Encyclopedia of Buddhism*, Oneworld Publications, Oxford, 2000.
41. Minkyi, T. (2024). Contribution of Tibetan scholars in Indian Pramāṇa study. *Bodhi-Path*, 26(1), 13–19.

42. Das, S. K. (2021). Mūlamadhyamakakārikā: Introduction and the Spread of its system of Teaching and Learning in India and Tibet. *Bodhi Path*, 20(1), 3-9.
43. Sharma, V. (2022). The practice of Pedagogy in Buddhist Mahaviharas of Ancient India. *Bodhi Path*, 23(2), 100-109.